SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 4

औद्योगीकरण का युग

भाग - 1

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1



डॉन ऑफ द सेंचुरी, ई.टी. पॉल म्युजिक कंपनी, न्यूयार्क (अमेरिका) एवं इंग्लेंड -सन् 1900

औद्योगीकरण का युग

- ई.टी. पॉल म्यूज़िक कंपनी ने सन् 1900 में संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी।
- इस किताब की जिल्द पर दी गई तसवीर में DAWN OF THE CENTURY (नई सदी के उदय) का ऐलान किया गया था।
- इस चित्र के मध्य में एक देवी जैसी तसवीर है।
- यह देवी हाथ में नयी शताब्दी की ध्वजा लिए हुए है।
- इस ध्वजा प्रगति की ध्वजा है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उसका एक पाँव पंखों वाले पहिये पर टिका हुआ है। यह पहिया समय का प्रतीक है। उसकी उड़ान भविष्य की ओर है।
- उसके पीछे उन्नति के चिह्न तैर रहे हैं : रेलवे, कैमरा, मशीनें, प्रिंटिंग प्रेस और कारख़ाना।
- मशीन और तकनीक का यह महिमामंडन एक अन्य तसवीर में और भी ज़्यादा साफ दिखाई देता है।
- यह तसवीर एक व्यापारिक पत्रिका के पन्नों पर सौ साल से भी पहले छपी थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2



दो जादूगर, इनलैंड प्रिंटर्स में प्रकाशित, 26 जनवरी 1901

- इस तसवीर में दो जादूगर दिखाए गए हैं।
- ऊपर वाले हिस्से में प्राच्य (Orient) इलाके का अलादीन है जिसने अपने जादुई चिराग को रगड़ कर एक भव्य महल का निर्माण कर दिया है।

प्राच्य : भूमध्य सागर के पूर्व में स्थित देश।

- आमतौर पर यह शब्द एशिया के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- पश्चिमी नज़रिये में प्राच्य इलाके पूर्व-आधुनिक, पारंपरिक और रहस्यमय थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- नीचे एक आधुनिक मेकैनिक है।
- यह मेकैनिक अपने आधुनिक औज़ारों से एक नया जादू रच रहा है।
- वह पुल, पानी के जहाज़, मीनार और गगनचुंबी इमारतें बनाता है।
- अलादीन पूरब और अतीत का प्रतीक है; मेकैनिक पश्चिम और आधुनिकता का प्रतीक है।
- ये तस्वीरें आधुनिक विश्व की विजयगाथा कहती हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



आदि-औद्योगीकरण की शुरूआत

- 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की तरफ रुख करने लगे थे।
- वे किसानों और कारीगरों को पैसे देकर उनसे अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार के लिए उत्पादन करवाते थे।
- उस समय विश्व व्यापार के विस्तार और दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण चीज़ों की माँग बढ़ने लगी थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस माँग को पूरा करने के लिए केवल शहरों में रहते हुए उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था।
- एक वजह तो यह थी कि शहरों में शहरी दस्तकारी और व्यापारिक गिल्ड्स काफी ताकतवर थे।

गिल्ड्स :- समान व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों का संगठन।

- ये गिल्ड्स उत्पादकों के संगठन होते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गिल्ड्स से जुड़े उत्पादक
  1. कारीगरों को प्रशिक्षण देते थे।
  2. इन कारीगरों पर नियंत्रण रखते थे।
  3. प्रतिस्पर्धा और मूल्य तय करते थे।
  4. व्यवसाय में नए लोगों को आने से रोकते थे।
- शासकों ने भी विभिन्न गिल्ड्स को खास उत्पादों के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार दिया हुआ था।
- फलस्वरूप, नए व्यापारी शहरों में कारोबार नहीं कर सकते थे। इसलिए वे गाँवों की तरफ जाने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.

आदि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया :-

- गाँवों में गरीब काश्तकार और दस्तकार सौदागरों के लिए काम करने लगे।
- यह वह समय था जब खुले खेत खत्म होते जा रहे थे।
- छोटे और गरीब किसान अपनी रोज़ी-रोटी के लिए साझा ज़मीनों से जलाने की लकड़ी, सब्ज़ियाँ, भूसा और चारा आदि बीन कर काम चला रहे थे।
- ये आमदनी के नये स्त्रोत ढूंढ रहे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- आदी उद्योगीकरण



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

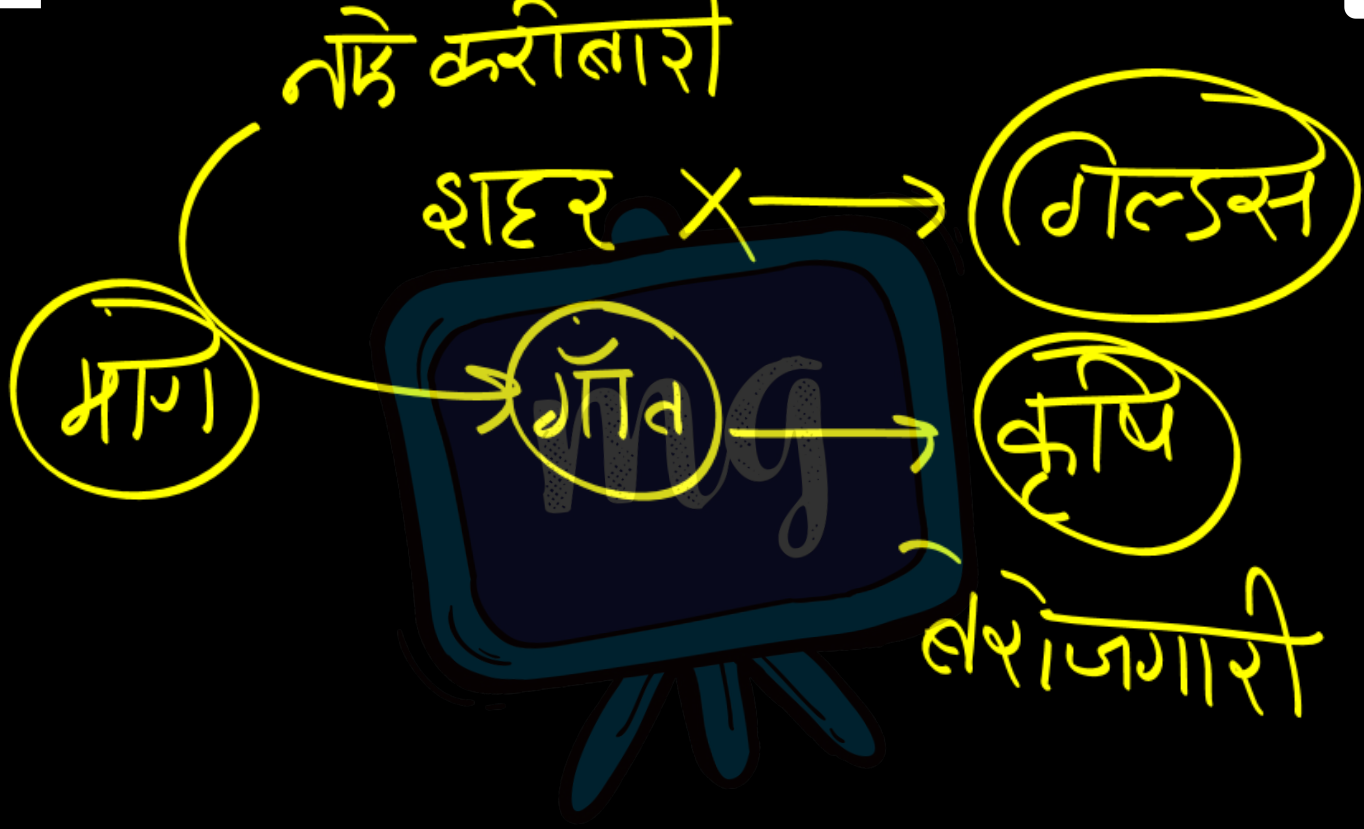

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

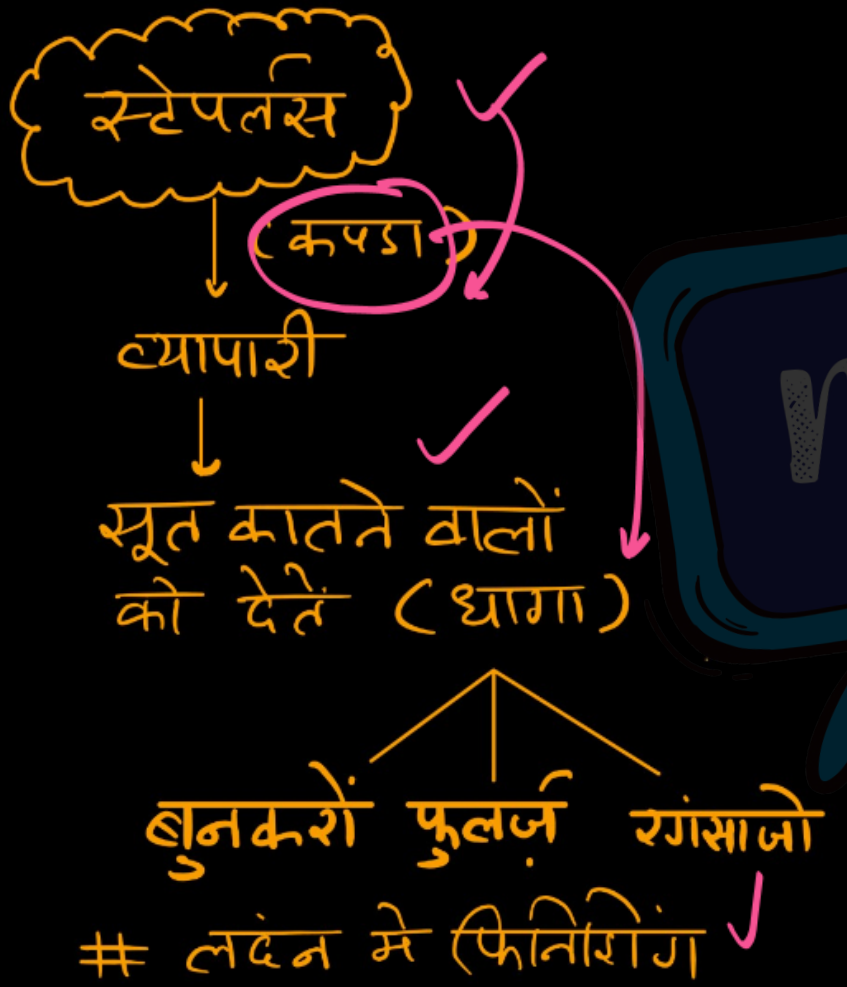

- बहुतों के पास खेत तो थे पर उनसे घर के सारे लोगों का पेट नहीं भर पा रहा था।
- इस स्थिति में जब सौदागर वहां आए और उन्होंने माल पैदा करने के लिए पेशगी रकम दी तो किसान फौरन तैयार हो गए।
- सौदागरों के लिए काम करते हुए वे गाँव में रहते हुए अपने छोटे-छोटे खेतों को भी सँभाल सकते थे।
- इस आमदनी ने उनको बड़ा सहारा दिया।
- अब उन्हें पूरे परिवार के श्रम संसाधनों के इस्तेमाल का मौका भी मिल गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

18वीं सदी में कताई



- परिवार के सभी सदस्य धागा बनाने के काम में लगे हैं।
- एक चरखे पर केवल एक ही तकली बन रही है।

- इस व्यवस्था से शहरों और गाँवों के बीच एक घनिष्ठ संबंध विकसित हुआ।
- सौदागर रहते तो शहरों में थे लेकिन उनके लिए काम ज़्यादातर देहात में चलता था।
- इंग्लैंड के कपड़ा व्यवसायी स्टेप्लर्स (Staplers) से ऊन खरीदते थे।
- उसे फिर सूत कातने वालों के पास पहुँचा देते थे। जिससे धागा बनता था।
- इससे मिलने वाले धागे को बुनकरों, फुलर्ज़ (Fullers), और रंगसाज़ों के पास ले जाया जाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

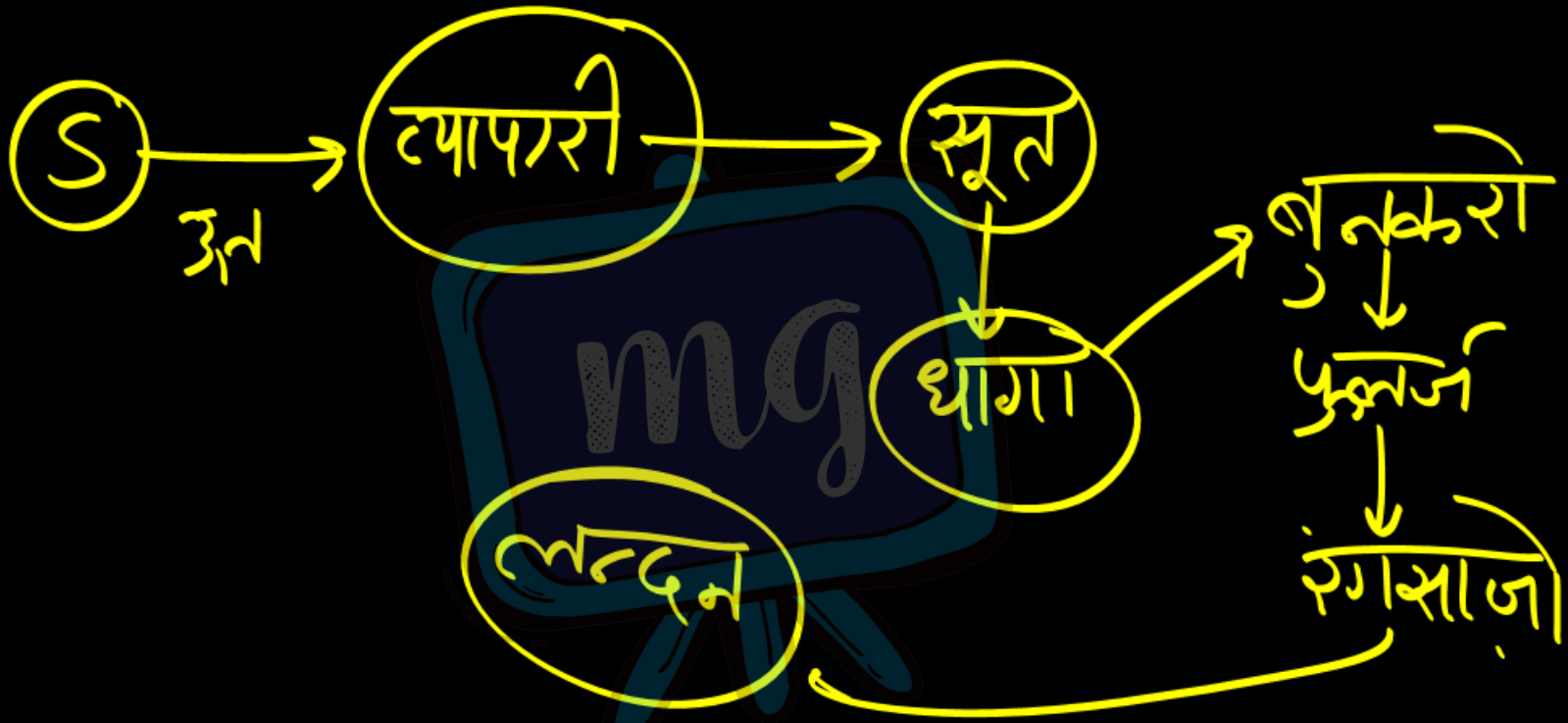

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लंदन में कपड़ों की फिनिशिंग होती थी। इसलिए लंदन को फिनिशिंग सेंटर के रूप में जाना जाने लगा।

स्टेपलर :- वह व्यक्ति जो ऊन को छाँटता है।

फुलर :- वह व्यक्ति जो चुन्नटों के सहारे कपड़े को समेटता है।

- इसके बाद निर्यातक व्यापारी कपड़े को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में बेच देते थे।
- अतः इस आदि-औद्योगीकरण में व्यवसायिक आदान-प्रदान होता रहता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस पर सौदागरों का नियंत्रण था और चीज़ों का उत्पादन कारखानों की बजाय घरों में होता था।
- उत्पादन के प्रत्येक चरण में प्रत्येक सौदागर 20–25 मज़दूरों से काम करवाता था।
- इसका मतलब यह था कि कपड़ों के हर सौदागर के पास सैकड़ों मज़दूर काम करते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कारखानों का उदय

- इंग्लैंड में सबसे पहले 1730 के दशक में कारखाने खुले लेकिन उनकी संख्या में तेज़ी से इज़ाफा 18वीं सदी के आखिर में ही हुआ।
- कपास (कॉटन) नए औद्योगिक युग का पहला प्रतीक थी।
- 19वीं सदी के आखिर में कपास के उत्पादन में भारी बढ़ोतरी हुई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1760 में ब्रिटेन 25 लाख पौंड कच्चे कपास का आयात करता था। 1787 में यह आयात बढ़कर 220 लाख पौंड तक पहुँच गया।
- क्योंकि वहां कपास-उद्योग की जरूरतें बढ़ गई थीं।
- यह इज़ाफा उत्पादन की प्रक्रिया में बहुत सारे बदलावों का परिणाम था।